सपनों का भंवर

(काव्य संग्रह)

किरण मोर

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-38-4

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © किरण मोर

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

‘Sapno ka bhawar’ by ‘Kiran More’

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत : प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं

भूमिका

मैं किरण मोर-वूमन आवाज अवार्ड के इस अंक में प्रकाशित मेरी रचनाएँ भी वूमन अर्थात नारी की उम्मीद और उत्कंठा की विवेचना करतीं हैं मेरी अधिकतर रचनाएँ नारी शोषण पर लिखी गई हैं,, क्योंकि मेरा मानना है कि नारी कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में हर युग में ही उत्पीड़न का शिकार होती आई है,, वह चाहे सतयुग हो, त्रेता या फिर द्वापर। किसी भी युग में नारी को अपनी उपेक्षाओं से मुक्त नहीं देखा गया है।

कहीं सती, सीता जैसी देवी स्वरूपों में, कहीं द्रौपदी, सती रूप में, कहीं परित्यक्ता तो कहीं परिणीता के रूप में। हर युग में नारी को ही उपेक्षित किया गया है और कलयुग में तो कहने ही क्या?

कलयुग में तो नारी शोषण की चरम सीमा की पराकाष्ठा पार कर गई है, क्योंकि यहाँ भी दहेज, घरेलू हिंसा, पुरुष प्रधान समाज, पर्दा प्रथा,भ्रूण हत्या और अब तो बलात्कार जैसी रोज घटने वाली घटनाएं, जिसमें नारी को केवल उपभोग की वस्तु समझकर रिश्तों को भी ताक पर रख दिया गया है। हर जगह हर उम्र और हर वक्त किसी न किसी रूप में उसे प्रताड़ित किया जा रहा है, कभी कभी तो कहीं कहीं या कहें कि अधिकांश नारी को ही नारी का शोषण करते हुए पाया गया है, जबकि वह भी कभी उसी राह गुजर चुकी है फिर भी नारी का दर्द समझने की बजाय अपना दर्द भी शामिल कर मानो अपना बदला ले रही है।

समाज, परिवार और देश में नारियों की इन्हीं व्यथाओं से रूबरू करातीं हैं मेरी रचनाएँ नारी,..चाहे वह किसी भी वर्ग से ताल्लुक रखती हो उच्च श्रेणी, मध्यम वर्गीय या फिर निम्न वर्ग, हर वर्ग की नारी किसी न किसी रूप में उत्पीड़न का शिकार हो रही है। आज आपके सामने अपनी रचनाओं द्वारा नारी की इसी दशा का स्वरूप दिखाने की कोशिश की है। जो कि आज की ज्वलंत समस्याओं में से सबसे अधिक घटने वाली समस्या है। कृपया अपनी प्रतिक्रिया देकर हमें प्रोत्साहित करें। धन्यवाद।

किरण मोर कटनी म. प्र.

अनुक्रमणिका

1. सपनों का भंवर (भाग-1) 5

2. सपनों का भंवर (भाग-2) 6

3. सपनों का भंवर (भाग-3) 7

4. उत्पीड़न 9

5. पिता का गर्व 9

6. संताप 10

7. क्षमा 11

8. सरहद 12

9. काश 13

10.सवाल 14

11.तमन्ना-रब से 15

12.किससे कहूँ 16

13. सपनों का भंवर (भाग-1)

अश्रु धारा बनकर निकली
गिरी शब्द कुछ बनकर
पन्नों पर है फैल गई
मेरी सुन्दर रचना बनकर।

ठेस लगी थी जिनसे स्वाभिमान
को
अपने ही थे वो सारे
जिनका बहुत अभिमान हमें था
उन्हीं ने कर दिए दूर किनारे।

जीवन नैया डूब रही है
बचा न कोई सपना
मझधार उसी ने छोड़ा है
जो वो था सबसे अपना।

कहते हैं नारी स्वतंत्र है
खुद ही गिराते उसपर गाज
खुद ही बलात्कारी बन
न बचने देते हैं उसकी लाज।

नारी को जो देवी कहते
वो ही सपनों को रौंदें
मंदिर क्या बनवाएं जो
खुद ही तोड़ें बसे घरौंदे।

हर मोड़ उसे जिल्लत देते
कुचल देते हैं उसका अभिमान
देख लगाते ठहाके उसपर
ले लेकर उसका इम्तिहान।

भूल गए हैं शायद ताकत वो
जब नारी रणचन्डी बन जाए
जान बचाकर छुपने का
रास्ता भी तब न नजर आए।

सपनों का भंवर (भाग-2)

सपनों के भंवर में फंसी अकेली
सोचे कल क्या होगा
नारी जीवन में सच क्या
कभी उजाला होगा।

हर एक का, हर एक सपना
पूरा करने को तत्पर रहती है
पर जब उसकी बारी आती है
घुट घुट कर जीती मरती है।

सपने छोटे से हैं पर उनका
दर्द बहुत ही भारी है
यही लगे उसको कि सचमुच
वो एक अबला नारी है।

बहती जाती है नदिया सी
सोचे कभी किनारा आए
बिन पतवार की नाव हूँ मैं
वह कहीं डूब न जाए।

कभी कोई समझेगा उसको
पड़ी इसी उलझन में
घना अंधेरा छाया है, वो
लिए सवेरा मन में।

जैसे पपीहा बैठा रहता है
लेकर के यह आस
स्वाति की जब बूंद मिलेगी
उसकी बुझेगी प्यास।

सारा जीवन किया निछावर
अपना सब अपनों पर
वो ही अपने कसते कमान
उसके नाजुक से सपनों पर।

दिखता बड़ा आकर्षक जीवन
किया गया जब मंथन
घुट घुट कर जीने की मजबूरी
उस पर भी जग के बंधन।

कार्य किया अमृत का था पर
मिला था विष का प्याला
जिनके लिए सारा जीवन ही
उसने अर्पित कर डाला।

सपनों का भंवर (भाग-3)

मार रहा मीठी बातों से
बात समझ जब आई
टूट गया विश्वास सभी का
अपने पर ही थी पछताई।

धराशायी हो गया महल वो
बना था जो विश्वास कणों में
उन्हीं से धोखा खाया
अपने थे हर क्षणों में।

सपनों का महल गिर जाए
जब अचानक ही भरभराकर
चीख निकल आत्मा की
रह जाती मलबे में दबकर।

फिर खड़ी होती है, रोती है
जीती है फिर मुस्कुरा कर
अपने जख्मों को छुपाकर
अपनी चोटों को सहलाकर।

आस लगाये बैठी है
बाट जोहती व्याकुल मन से
मौत नहीं आई है फिर से
लड़ती है जीवन से।

उसका जीवन भी बदलेगा
विश्वास भरी है इक आशा
कभी तो बदलेगी शायद
नारी जीवन की परिभाषा।

कहते हैं नारी स्वतंत्र है
पर दूर अभी है मंजिल
पार लगाए उसकी नैया
कहाँ छुपा है वो साहिल।

आशाओं के द्‌वीप जले हैं
कि शायद कहीं सवेरा है
ज्योति भले उजाला करती
दीपक तले अंधेरा है।

उत्पीड़न

बचने न दी लाज है उसकी
घर के अंदर चार दीवारों में
अब वह लांघ चली है गोरी
बिकने को बाजारों में।

बिकी खड़ी वस्तु सी वह
ले लेते हैं कुछ कलदारों में
बड़े बड़े वादों से लुभाते
पर्दे पीछे क्या करते दरबारों में।

कारोबार नहीं करने को
बचा है अब व्यापारों में
तो ले आए हैं देखो ये
इज्जत बेचने बाजारों में।

उसकी खोई इज्जत की रोटी
हजम कर जाते चंद डकारों में
नोटों के जाल उलझी मानवता
इज्जत के ठेकेदारों में।

नहीं सुरक्षित बहू बेटियां
घर की ही दीवारों में
अंदर बाहर वह सुलग रहीं
हैं खड़ी हुई अंगारों में।

उसकी नुमाइश होती है जैसे
कपड़े बिकते हैं बाजारों में
चारों ओर घिरा पाती है खुद को
अपने ही सब दावेदारों में।

नाक बड़ी लेकर चलते हैं
शान से बड़ी सफारी कारों में
घर की इज्जत को हैं बदलते
बांटते हैं साझेदारों में।

ईश्वर का दर्जा दिया तुम्हें उसने
करवा चौथ, तीज त्योहारों में
तुमने क्या उसे देवी माना
मंदिर से ले आए बाजारों में।

देवी का दर्जा मिलता है उसको
अब कवि, लेखक के किरदारों में
अग्नि परीक्षा देती है हमेशा
सत्ता कोई रहे सरकारों में।

अपनी ऐसी दशा देख नारी
अब घिर गई है प्रतिकारों में
तो फिर वह भी लाज छोड़
जा पहुंची चांद सितारों में।

पिता का गर्व

बेटा बेटी दोनों ही उनका
अभिमान होती है
बेटा गुरूर है तो बेटी
उनका स्वाभिमान होती है।
एक पिता की चाहत बस
उनकी संतान होती है
बेटे गर जान है उनकी तो
बेटी में उनकी जान होती है।

बेटी को पराया करने पर
मां से ज्यादा व्याकुल होते हैं
जो आंखों का तारा थी
भेजने में धीरज वो खोते हैं।
गर्व पिता का है वो, पर
रीत निभानी पड़ती है
बेटी की चिंता में रात-रात
आंखें अश्कों से भिगोते हैं।

पिता अपनी संतानों को
आकाश बुलंदी दे डालें
उनको परवाजें देने वो
खुद को ही तंगी दे डालें।
उनकी कल की आस बने
चाहत दिल में होती है
आते हैं जबसे पालने में
जीवन आहूति दे डालें।

संताप

जर्जर मकान अरु देह सम
ज्योति नेत्र रही धुंधलाय
कागज कोरे जीवन व्यथा कहें
अंतिम क्षण बीत रहे अकुलाय

पति संग भी छूट गया
और गई जवानी नेह
पांच इंद्रियां शिथिल भ ईं
साथ नहीं दे कोई सस्नेह

छोड़ गए रिश्ते नाते सब
आंखों में किरकिरी अस पड़ी
चाहें आंचल की छांव क्या
रहना संग लजाय घड़ी दो घड़ी

तरसे नयन छवि देख ले
है संतोष कोई तो उसका भी
पर विरह वेदना झलक रही
रहती उदास है ममता भी

भूली बिसरी यादें हैं हाथों में
पढ़ने की कोशिश में झांक रहीं
आंखों में जाले छाये हैं
और तन बाकी कुछ सांस बचीं।

क्षमा

हे तात क्षमा दे दो मुझको
लेने को आई हूँ मैं तुमको
वापस चलो राम अयोध्या
प्राणों से प्रिय हो कैकेयी को

मंथरा की बातों में आई थी
कुटिल मति मेरी भरमाई थी
अब वन मत जाओ हे तात
प्रायश्चित करना चाहूँ मानो बात

हे मात क्षमा की नहीं बात
पितृ वचन की है सौगात
वन जाकर मैं उसे निभाऊंगा
राक्षस वध कर वापस आऊंगा

अब भी भरत वही है अनुज मेरा
तुम मात मेरी मैं वही राम तेरा
मत किंचित भी चिंतित होना
धीरज अपना बस मत खोना

कर्तव्य पथ प्रशस्त करूँ जाकर
मर्यादा पुरुषोत्तम की छवि पाकर
मैं धन्य मात तुमको पाकर
सत्मार्ग दिखाया वन पहुंचा कर

सरहद

शहीद का तन कफन में ढक
सरहद से वापस आ गया
न ई नवेली दुल्हन का सुहाग
अपना शीश फिर कटवा गया

हद नहीं रही है आतंकवाद की
फैलाते हैं इन्हें कोई गुरेज नहीं
पर हम भी दम खम रखते हैं
सीने से अपना लहू बहा गया

जब तक तन में सांस बाकी है
कदम पीछे न लेंगे हम
वतन की मिट्टी लगा माथे पर
तिरंगा वतन का है फहरा गया

कोई सरहद न सीमा है
देश पर जान देने की
भारत भूमि का कर्ज था
कटाकर शीश को चुका गया।

काश

ईश्वर ने इस कलयुग में
थोड़ा सा डिस्काउंट दिया होता
जीवन जीने के नियमों में
कुछ फेरबदल किया होता

किसी की किस्मत को अगर
किसी और से बदला जा सके
ऐसा कोई एक्सचेंज आफर
लागू गर किया होता

दुनिया शायद आज फिर
इतनी भी स्वार्थी न होती
किसी से अपनी किस्मत
बदल के थोड़ा खुश हो लेती

छीनने में माहिर सब यहाँ
क्योंकि एक-दूसरे की किस्मत
जानते हुए कि जिन्दगी सबकी
कभी एक सी नहीं होती

सवाल

जिन्दगी स्वयं की एक सवाल बन खड़ी है
आपाधापी तेज रफ्तार में बेलगाम चल पड़ी है

दिखती है ना रिश्तों में और न ही नातों में
प्रेम प्यार की परिभाषा दिलों में तन्हा सोई पड़ी है

दिखावे का चलन जीने का अंदाज़ बन गया है
सादगी कहीं कोने में खोई खोई सी खड़ी है

सूक्ष्म सी दिखाई देती नजर भी नहीं आती है
स्वार्थ के घेरे में चाटुकारिता जब से हुई बड़ी है

सलाम उसे मिलता दबंगई जो है दिखलाता
मानवता की जगह दिलों में खाली ही पड़ी है

भटक रहे हैं पाने को सही मंजिल तलाशने में
राहें अनेक हैं दिखती सही चुनाव की घड़ी है

तमन्ना-रब से

आज तुमसे भी मिलने की तमन्ना जागी है
मेरी रुह भी परछाई सी तेरे पीछे भागी है

जाऊं कहाँ सोच न पाऊँ जग में तेरे बिन
जीने की आरजू भी है तुमसे भी लगन लागी है

पलकें अपनी बंद कर तुझमें ही डूब जाऊँ मैं
नजदीक तेरे आया जो वो परम बड़भागी है

राधेश्याम तेरी भक्ति का रस पीने को मिल जाए
हर जाम नशे के सुरूर में लगे तू अनुरागी है

आ जाऊँ तेरी पनाह में वजूद अपना पाने को
अब ये दुनिया मोह-माया तेरे सदके में त्यागी है

जीवन संवर गया है आने का मकसद पूरा हो गया
तेरी शरण आके मन मेरा हो गया बैरागी है

किससे कहूँ

निगाहें ढूंढतीं हैं उसको,
जिसे सुना सकूं मैं अपनी दर्दे दास्तान।
किससे कहूँ,...

कुछ कर गुजरने की चाहत
रही हमेशा से ही मन में
मुझे छूना था आसमान, किससे
कहूँ

क्या अपना क्या पराया
सबकी स्वार्थपरता में
टूटता गया स्वाभिमान, किससे
कहूँ

सजाया था घर को अपने
इक इक पल को खोकर
बनके रह गया मकान, किससे कहूँ

कहूँ मैं कोई सुनने वाला नहीं
किसी ने कहा मेरे लिए
हो गया वो फरमान, किससे कहूँ

संजोए सपने जो थे
अपनों के साथ रहने के
अधूरे रह गए अरमान, किससे कहूँ

कर सकीं न कुछ जीवन में
अधूरा रह गया सपना
मैं न भर सकी उड़ान, किससे कहूँ

अपने हाथों ही सजाया
हमने चमन था अपना
पड़ा हुआ है वीरान, किससे कहूँ

चुन चुन के कलियाँ हमने
सजाई थी अपनी बगिया
है वो खूशबू से अंजान, किससे कहूँ

हमने दिल से अपने
सभी को अपना समझा
हम थे बड़े नादान, किससे कहूँ

जीवन सफर के अपने
तीनों पन में थक गई हूँ
दे देकर के इम्तिहान, किससे कहूँ।